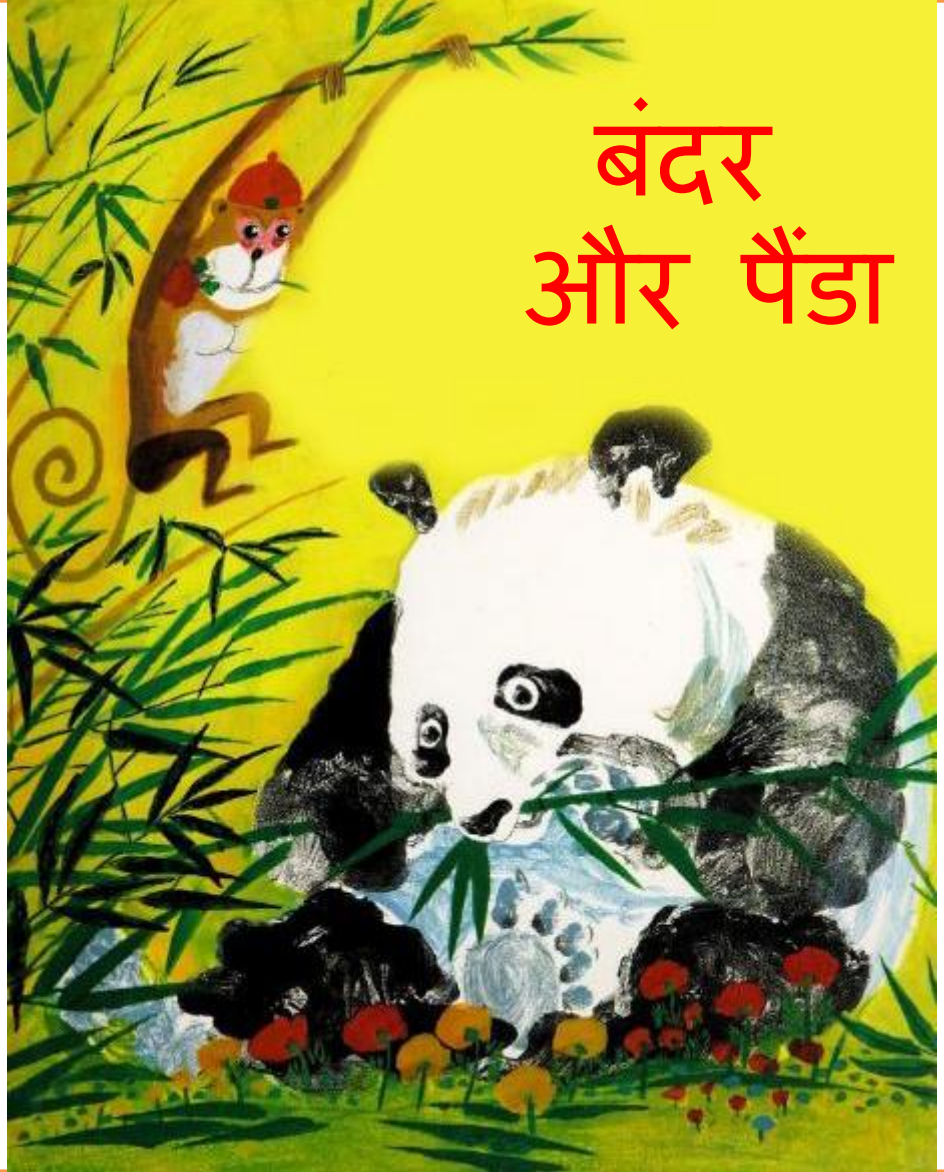
बंदर
और पैंडा

“पैंडा नीरस है,” या ऐसा ही कुछ ईर्ष्यालु बंदर कहता है. फिर गांव के बच्चे पैंडा को अधिक प्यार क्यों करते हैं? या क्या वह सच में ऐसा करते हैं?

लेकिन जब एक ज्ञानी पुरुष से कहा गया कि वह परख कर बतायें कि कौन श्रेष्ठ है तो उनके परिणाम ने सबको हैरान कर दिया.

ईर्षा से संबंधित इस कहानी में, जीवन में विभिन्नता और कल्पना शक्ति के महत्व को बड़े रोचक ढंग से उजागर किया गया है.

# बंदर और पैंडा

बहुत समय पहले, जहाँ सूर्योदय होता है वहाँ, एक समय एक बंदर और एक पैंडा रहते थे. बंदर पतला और फुर्तीला और उत्साही था. पैंडा मोटा और रोमदार और स्नेहशील था.

गांव के बच्चे दोनों को बहुत प्यार करते थे. जब वह खेलते थे तो बंदर उन्हें अच्छा लगता था क्योंकि वह खूब शोर मचाता था. वह नटखट था और उन्हें खूब हँसाता था. जब वह थक जाते थे तो वह पैंडा के पास चले जाते थे जो शांत रहता था और सोने के लिए नरम और गुदगुदा था.

लेकिन बंदर पैंडा से ईर्षा करने लगा था क्योंकि उसे लगता था कि बच्चे पैंडा को अधिक चाहते थे.

बच्चों को हँसाने के लिए हर दिन वह अजीब से अजीब करतब करने लगा. उसकी शरारतें गांव में तबाही मचा देतीं. आखिरकार गांव वाले उससे छुटकारा पाने की बात सोचने लगे. लेकिन वह सब बहुत दयालु थे और उसे कोई कष्ट न पहुँचाना चाहते थे.

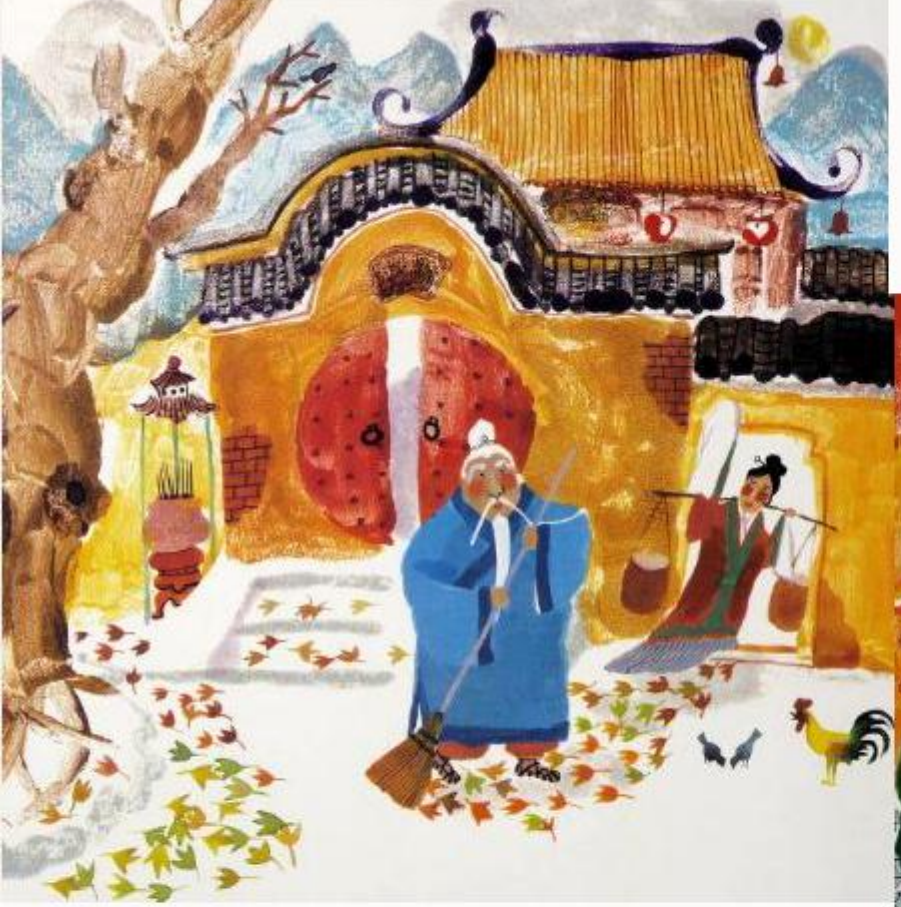

गांव के निकट एक उजाड़ मन्दिर था. एक वृद्ध ज्ञानी के अतिरिक्त, वहाँ रहने वाले सब भिक्षु दूर देशों में चले गए थे, वृद्ध ज्ञानी इतने कमज़ोर थे कि ऊँचे-ऊँचे पहाड़ पार न कर सकते थे. गांव के लोग उनके लिए खाना ले आते थे और उनकी देखभाल करते थे और वह लोगों को अपना ज्ञान देते थे.

जब लोगों ने बंदर की भयंकर शरारतों के विषय में उन्हें बताया तो वह मुस्कराये.

“गुरु जी,” लोग बोले, “यह कोई हँसी-खेल नहीं है!”

“नहीं, बिलकुल नहीं,” ज्ञानी पुरुष ने कहा, “मैं समझ रहा हूँ कि यह एक गंभीर समस्या है. बंदर को मेरे पास लेकर आओ, मैं उससे बात करुंगा.”

लोग बंदर को लेकर आए, जो दुःखी और नाराज़ था.
“इसे नीचे रखो,” वृद्ध ने प्यार से कहा, “और हमें अकेला छोड़ दो.” फिर उन्होंने बंदर से पूछा कि वह इतना उपद्रवी क्यों हो गया था.
“सारी गलती पैंडा की है,” बंदर ने कहा.
“यह कैसे हो सकता है?” वृद्ध ज्ञानी ने पूछा. “पैंडा तो बाँस के उपवन में रहता है, वहीं खाता है, वहीं सोता है और किसी को तंग भी नहीं करता है.”
“आप सत्य कह रहे हैं,” बंदर ने कहा, “लेकिन फिर भी बच्चे उसे प्यार करते हैं. मैं उन्हें हँसाने का कितना भी प्रयास क्यों न करूँ, अंत में वह उसके पास चले जाते हैं. फिर भी गुरु जी आप परख कर बतायें कि क्या मैं उससे श्रेष्ठ नहीं हूँ!”

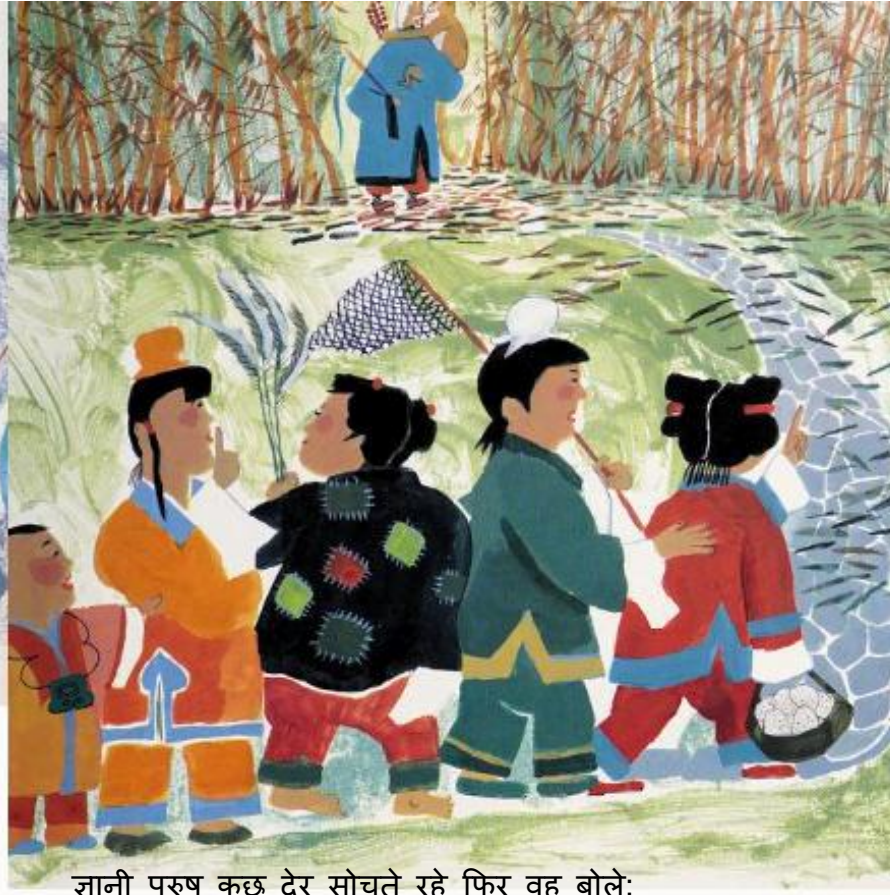

ज्ञानी पुरुष कुछ देर सोचते रहे फिर वह बोले:
“क्या तुम चाहते हो कि तुम दोनों को परख कर मैं निर्णय दूँ? तुम जानना चाहते हो कि कौन श्रेष्ठ है और कौन नहीं? अगर ऐसा है तो पैंडा से पूछना होगा कि वह अपने विषय में क्या कहना चाहता है.”
उन्होंने बंदर को अपने कंधे पर उठा लिया और उस उपवन की ओर चल पड़े जहाँ पैंडा रहता था. बच्चे, जो खंडहरों में छिपे बैठे थे, चुपके से उनके पीछे चल पड़े.

पैंडा उन्हें उपवन के बीच में बाँस की टहनियाँ चबाता मिला.

वृद्ध ने उसका अभिवादन किया और पैंडा ने सिर हिला कर उत्तर दिया. लेकिन उसने कुछ कहा नहीं, क्योंकि वह अच्छा व्यवहार करना जानता था और उसका मुँह पत्तों से भरा हुआ था.

"देखा आपने," बंदर ने कहा, "अपने बारे में कहने के लिए इसके पास कुछ नहीं है."

"पैंडा, मेरे मित्र," वृद्ध ने कहा. "तुम्हें और बंदर को मैं परखने आया हूँ, कि दोनों में कौन श्रेष्ठ है."

पैंडा शांत भाव से टहनियाँ चबाता रहा. अगर उनकी बातों ने उसे आश्चर्यचकित किया था तो उसने ऐसा नहीं दर्शाया.

"दोनों बारी-बारी अपनी बात कहना," ज़मीन पर बैठते हुए, वृद्ध ने कहा. यह देखने के लिए कि अब आगे क्या होगा, सब बच्चे उपवन के ऊँचे-ऊँचे बाँसों के पीछे छिप गए.

अपनी बात कहने को बंदर बहुत ही उतावला हो रहा था.

“मैं पैंडा से श्रेष्ठ हूँ,” उसने अकड़ कर कहा, “क्योंकि ऐसी कोई जगह नहीं है जो मेरी नहीं है. ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की शिखरों से लेकर नीचे जंगल की ज़मीन तक मेरा राज्य है. मैं पेड़ों पर चढ़ सकता हूँ, मैं झूल सकता हूँ, मैं कूद सकता हूँ, मैं उड़ सकता हूँ-अर्थात, लगभग उड़ सकता हूँ. लेकिन यह पैंडा दिन भर बाँस के उपवन में बस बैठा रहता है और कहीं आता-जाता नहीं है.”

पैंडा कुछ न बोला. वह चारों ओर हो रही पत्तों की सरसराहट सुनता रहा. धुंध से छन कर आती पीली धूप की किरणों को देखता रहा. उसे लगता था कि बाँस का वह उपवन दुनिया में सबसे सुंदर स्थान था.

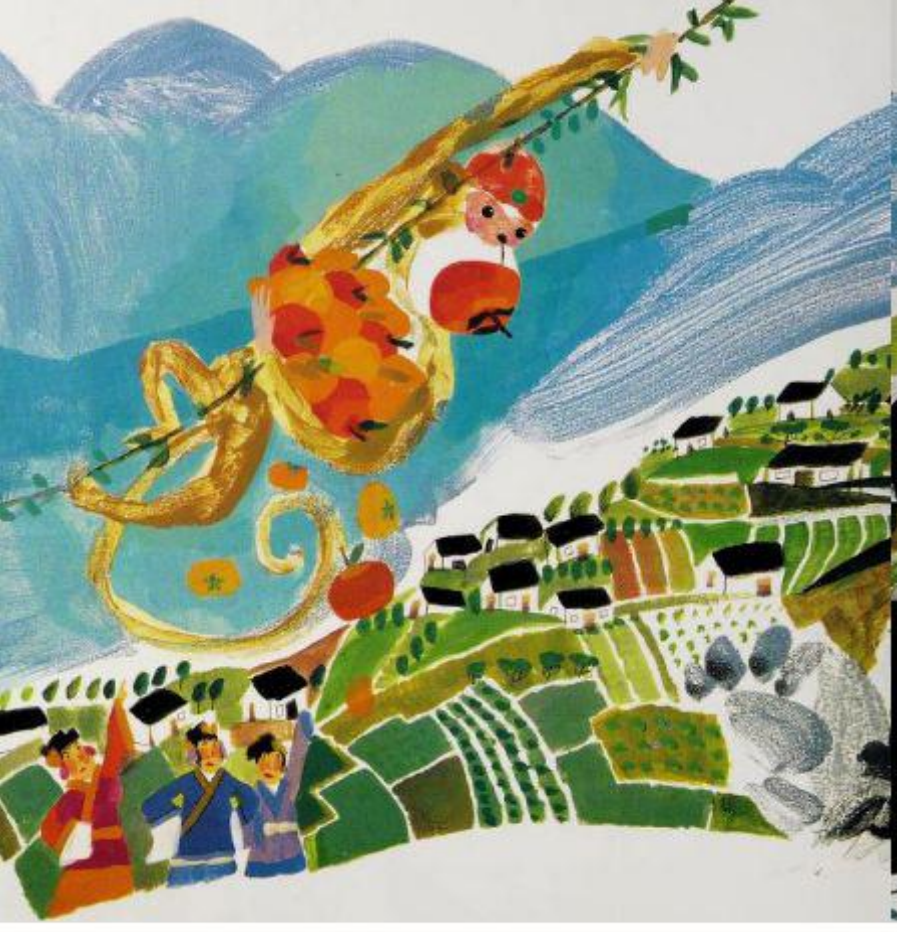

“मैं इस पैंडा से अधिक चालाक हूँ,” बंदर कहता रहा. “मैं पेड़ों के शिखरों पर फल ढूंढ लेता हूँ, पक्षियों के घोंसलों से अंडे निकाल लेता हूँ, पेड़ों के कोटर में शहद सूँघ लेता हूँ. मैं गाँव वालों से अधिक चतुर हूँ, क्योंकि उनको चकमा देकर मैं उनका खाना छीन लेता हूँ.”

पैंडा कुछ न बोला क्योंकि उसका मुँह नरम, हरे पत्तों से भरा हुआ था. पत्ते बिलकुल ताज़ा, कुरकुरे और मीठे थे. उसे लगा कि बाँस के पत्तों और टहनियों से अधिक स्वादिष्ट इस संसार में कुछ भी न था.

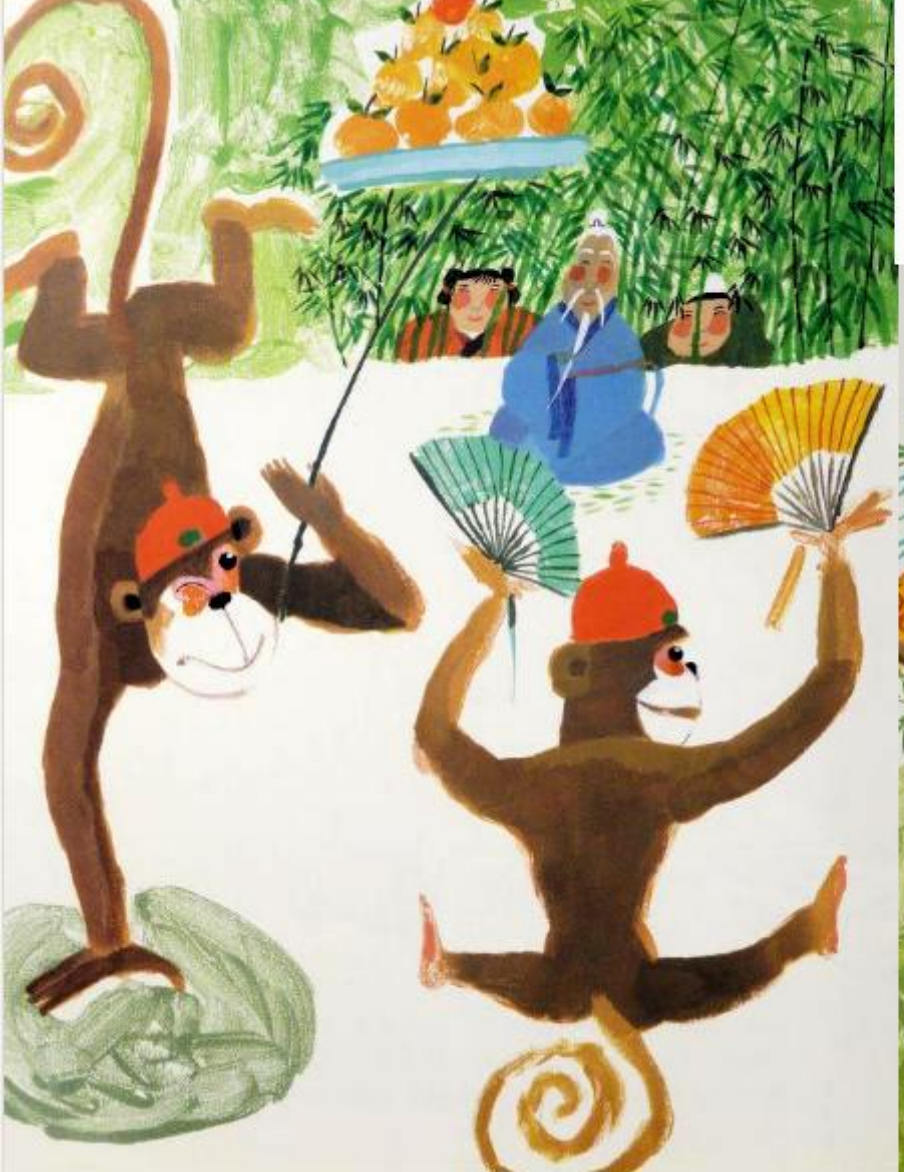

“आपको मानना पड़ेगा कि पैंडा के बजाय मैं लोगों का अधिक मनोरंजन करता हूँ,” बंदर ने कहा. “मेरे करतब बच्चों को हँसाते हैं. मेरा साहस देखकर वह दंग रह जाते हैं. मैं पैंडा से अधिक साहसी और निडर और उत्साही हूँ. मेरी तुलना में पैंडा बिलकुल नीरस है.”

पैंडा ने फिर भी कुछ न कहा क्योंकि वह सो गया था. नींद में वह सुनहरी धूप का, हवा में थरथराते बाँस के पत्तों का और मुँह में भरे बाँस की टहनियों के स्वाद का सपना देख रहा था. उसे लगा कि उसका सपना सारे संसार में सबसे अच्छा सपना था.

बंदर अब हताश हो गया. वह ऊटपटाँग डींगे मारने लगा. “मैं बादलों पर सवारी कर सकता हूँ,” वह चिल्लाया. “मैं आँधी से भी तेज़ चल सकता हूँ. मैं पहाड़ों के ऊपर चढ़कर, पृथ्वी के छोर तक जा सकता हूँ. अरे, मैंने तो दानवों से लड़ कर राजकुमारियों को भी छुड़ाया है!”

जब बच्चों ने यह बातें सुनी तो अपनी छिपने की जगह से वह बाहर आ गए और चुपचाप बंदर के निकट इकट्ठे हो गए.
फिर बंदर ने जादू की और दानवों की और अपनी वीरता की और बहादुरी से राजकुमारियों को बचाने की एक लंबी कहानी उन्हें सुनाई. उसकी बातें सुन कर बच्चे सम्मोहित हो गए और आश्चर्य से उनकी आँखें बड़ी हो गईं.

लेकिन अगर आप पूछें, क्या वह सब सच था? मैं आप से इतना ही कहूँगा कि यह सब कुछ बंदर के सपनों में घटा था, इसलिए उसके सपनों में यह सब सच था.
जब बच्चे कहानी सुन रहे थे तब उन्हें अपने उन सपनों का ध्यान आया, जिन्हें वह नींद से जागने पर भूल गए थे. बंदर ने उन्हें उनके सपने लौटा दिए थे.

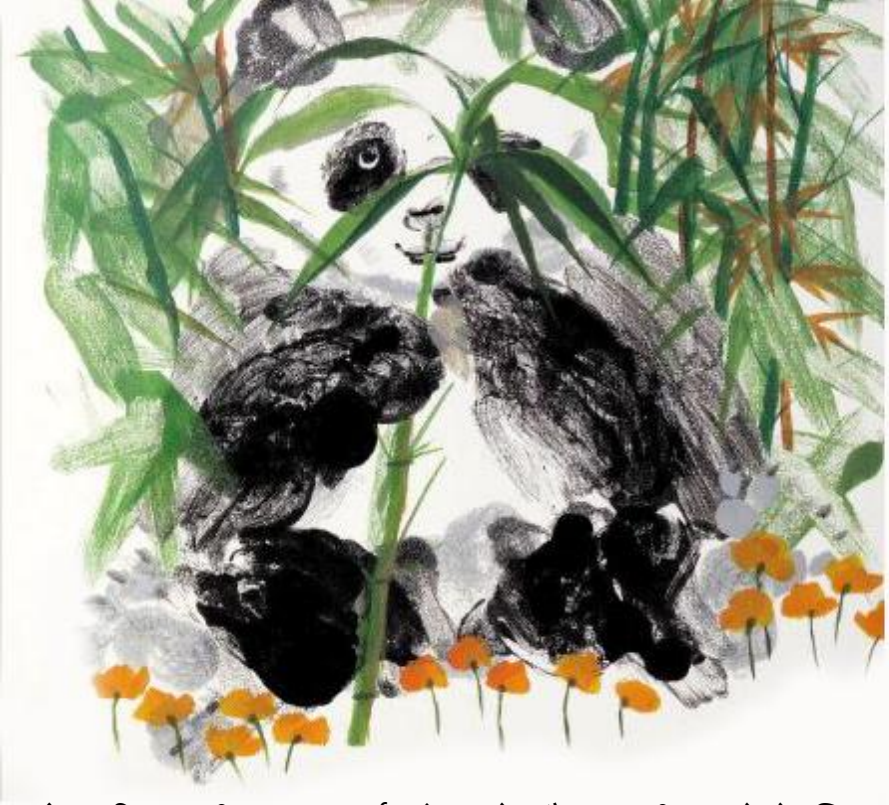

बंदर की कहानी समाप्त हुई तो बच्चे और कहानी सुनने के लिए चिल्लाने लगे.
लेकिन ज्ञानी पुरुष ने उन्हें चुप रहने के लिए कहा. फिर उन्होंने पैंडा से कहा, "पैंडा, अब तुम्हें भी अपनी बात कहनी होगी ताकि मैं तुम दोनों को परख पाऊँ."
तब पैंडा जाग गया, लेकिन वह अभी भी सपने में लग रहा था. बाँस के उपवन से, जो उसका घर और उसका जीवन था, अपने प्यार से प्रेरित होकर वह अंतत: बोला. उसकी वाणी उतनी ही मधुर थी जितनी बहती हवा में पत्तों की सरसराहट थी. उसने कहा:

"हवाओं में सरसराहट, तूफ़ानों में शरण,
भोर की धुंध में, चमकती सूर्य की किरण.
मुँह में स्वादिष्ट, जिह्वा पर रुचिकर,
तुम बन जाते मैं, एक हो जाते हैं हम."

और बच्चे जो जीवन-भर बाँस के उपवन में खेलते रहे थे, उन्होंने कभी भी उपवन को ध्यान से देखा न था. अब उन्होंने धूप में धीरे-धीरे हिलते हुए पत्तों को देखा और उन्हें लगा कि वह सच में पत्तों को पहली बार देख रहे थे.

वृद्ध ज्ञानी बच्चों को देखकर मुस्कराये और बोले, “हमारा जीवन कितना संपन्न हो गया है! बंदर हमें संसार के अंतिम छोर तक ले गया और पैंडा हमें संसार के हृदय के भीतर ले गया. इन दोनों को परखने वाला मैं कौन हूँ?”
“बच्चों, बंदर को प्यार करो क्योंकि वह एक उत्तम कथा-वाचक है और पैंडा का सम्मान करो क्योंकि वह एक कवि है.”

बंदर पतला और फुर्तीला
और उत्साही है.
पैंडा मोटा और रोमदार
और स्नेहशील है.
कौन अधिक प्यार
करने योग्य है?